DATE 21.10.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'अलबम') लेखक - सुदर्शन

भाग-2

पुस्तक - नवतरंग - 8

प्यारे बच्चो! सुप्रभात।

आज हम कक्षा आठवीं की पाठ्य पुस्तक नवतरंग भाग-8 के पृष्ठ-81 से आगे का भाग पढ़ेंगे।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने इस पाठ के अंश को पृष्ठ-81 तक पढ़ लिया था। मैं पाठ को पढ़ाते समय कुछ प्रश्न पूछती जाऊँगी। आप इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तीन मिनट का समय लेंगे। अतः पाठ को ध्यान से पढ़ना और समझना अति आवश्यक है।

प्यारे बच्चो! पिछले सप्ताह हमने पढ़ा था कि पंडित शादीराम ने पाँच सौ रुपए का कर्ज़ अपने यजमान लाला सदानंद से लिया था। पंडितजी अपने यजमान का ऋण चुकाना तो चाहते थे लेकिन उनके सामने कोई-न-कोई ऐसी विकट परिस्थिति सामने आकर खड़ी हो जाती कि वे जो भी पैसा बचाकर रखते, खर्च हो जाता। पंडित बहुत निराश हो चुके थे। लाला सदानंद पंडितजी की परिस्थिति को समझते थे। वे पंडित जी से ऋण के विषय में जिक्र भी नहीं करते थे। वे उनकी मदद करना चाहते थे। एक दिन लाला सदानंद ने पंडितजी के घर की अलमारी में रखी पुरानी पत्रिकाओं को देखकर पंडित-जी को उनमें से चित्र निकालकर एक अलबम बनाने का सुझाव दिया। उसे बेचकर हज़ारों रुपए कमाने के लिए कहा। जो भी चित्रों का शौकीन होगा, वह इसे खरीद लेगा। इसके लिए विज्ञापन देने की आवश्यकता है। ऐसा उन्होंने कहा।

पंडित जी अपने यजमान की बात सुनकर कुछ आश्वस्त हुए। उन्हें आशा की किरण जागती नज़र आई।

बच्चो! पाठ को आगे पढ़ना शुरू करते हैं -

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

DATE 21.10.24
PAGE No. 2

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 'अलबम')

पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयलों में हीरा मिल जाएगा। घोर निराशा ने आशा के द्वार चारों ओर से बंद कर दिए थे। वे उन हतभाग्य मनुष्यों में से थे जो संसार में असफल और केवल असफल रहने के लिए उत्पन्न होते हैं। सोने को हाथ लगाते थे तो वह भी मिट्टी हो जाता था। उनकी ऐसी धारणा ही नहीं, पक्का विश्वास था कि यह प्रयत्न भी कभी सफल न होगा। परंतु लाला सदानंद के आग्रह से दिन-भर बैठकर तस्वीरें छाँटते रहे।

न मन में लगन थी, न हृदय में चाव। परंतु लाला सदानंद की बात को टाल न सके। शाम को देखा, दो सौ एक-से-एक बढ़िया चित्र हैं। उस समय उन्हें देखकर वे स्वयं उछल पड़े। उनके मुख पर आनंद की आभा नृत्य करने लगी, जैसे फेल हो जाने का विश्वास करके अपनी **प्रारब्ध** पर रो चुके विद्यार्थी को पास हो जाने का तार मिल गया। उस समय वह कैसा प्रसन्न होता है। चारों और कैसी विस्मित और प्रफुल्लित दृष्टि से देखता है। यही अवस्था पंडित शादीराम की थी। वे उन चित्रों की ओर इस तरह से देखते थे मानों उनमें से प्रत्येक दस-दस का नोट हो। बच्चों को उधर देखने न देते थे। वे सफलता के विचार से ऐसे प्रसन्न हो रहे थे, जैसे सफलता प्राप्त हो चुकी हो, यद्यपि वह अभी कोसों दूर थी। लाला सदानंद की आशा उनके मस्तिष्क में निश्चय का रूप धारण कर चुकी थी।

बच्चो! अब हम पाठ में आए कुछ कठिन शब्दों को पढ़ेंगे।
शब्दार्थ:-

हतभाग्य - अभागा, भाग्यहीन
आग्रह - हठपूर्वक निवेदन
प्रफुल्लित - हर्षित
चाव - इच्छा, शौक
प्रारब्ध - भाग्य
विस्मित - हैरान
आभा - शोभा, चमक
लगन - मन लगना, लौ

बच्चो! जो सुझाव लाला सदानंद ने पंडित शादीराम को दिया उसे सुनकर एक आशा की किरण जगती नज़र आई। वहीं वे दूसरी ओर स्वयं को भाग्यहीन समझते थे। वे सोच रहे थे कि ये रद्दी पुस्तकें कोयले की खान की तरह से हैं। इनसे हीरा अर्थात् पैसे मिलना कठिन लग रहा था। फिर भी वे लाला जी के कहने से तस्वीरें छाँटने में लग गए। शाम होने तक उन्होंने दो सौ के करीब एक-से-एक बढ़िया चित्र एकत्रित कर लिए। उन चित्रों को देखकर वे इतने प्रसन्न

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 21.10.24
PAGE No. 3

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'अलबम')

हुए जैसे एक विद्यार्थी जो परीक्षा में फैल होने का विश्वास करके अपने भाग्य पर रो चुका हो और अचानक एक संदेश द्वारा जब उसे पता चलता है कि वह पास हो गया है, उस समय वह कैसा प्रसन्न होता है और चारों ओर हैरानी वाली दृष्टि से देखता है। यही हाल पंडित शादीराम का था। यद्यपि सफलता दूर थी तथापि लाला-सदानंद की आशा उनके मस्तिष्क में निश्चय का रूप धारण कर चुकी थी।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का समय लेंगे तथा इनके उत्तर आप अपनी पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न-1. लाला सदानंद ने पंडित शादीराम को क्या सुझाव दिया?
प्रश्न-2. पंडित शादीराम ने पुरानी पत्रिकाओं में से कितने चित्र एकत्रित कर लिए थे तथा उन्हें देखकर पंडितजी को कैसा अनुभव हो रहा था?
प्रश्न-3. 'प्रारब्ध' और 'हतभाग्य' के शब्दार्थ लिखो।

बच्चो! अब आपके प्रश्नोत्तर लिखने का समय समाप्त हो गया है। आशा है आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे! पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं—

उत्तर-1. लाला सदानंद ने शादीराम को सुझाव दिया था कि पुरानी रखी पत्रिकाओं में से सुंदर-सुंदर चित्र काटकर रख लें फिर उनकी एक अलबम बनाकर विज्ञापन निकलवा दें। किसी शौकीन को चित्रों की अलबम पसंद आ जाती है तो उसको बेचकर हज़ार-२ हज़ार रुपए कमाए जा सकते हैं।
उत्तर-2. पंडित शादीराम ने पुरानी पत्रिकाओं में से दो सौ चित्र एकत्रित कर लिए थे। इन चित्रों को देखकर वे खुशी से उछल पड़े मानो प्रत्येक चित्र दस-दस का नोट हो।

Scanned with CamScanner

DATE 21.10.24
PAGE No. 4

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 'अलबम') लेखक- सुदर्शन

उत्तर-3 'प्रारब्ध' का अर्थ भाग्य और 'हतभाग्य' का अर्थ अभागा या भाग्यहीन है।

बच्चो! अब हम पाठ को आगे पढ़ते हैं।

लाला सदानंद ने चित्रों को अलबम में लगवाया और कुछ उच्च कोटि के समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दिया। अब पंडित शादीराम हर समय डाकिये की प्रतीक्षा करते रहते थे। रोज़ सोचते थे कि आज कोई चिट्ठी आएगी। दिन बीत जाता, और कोई उत्तर न आता था। रात को आशा सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी, परंतु दूसरे दिन लाला सदानंद की बातों से टूटी हुई आशा फिर बँध जाती थी, जिस प्रकार गाड़ियाँ चलने से पहले दिन की बैठी हुई धूल हवा में उड़ने लगती है। आशा फिर अपना चमकता हुआ मुख दिखाकर दरवाज़े पर खड़ा कर देती थी; डाक का समय होता तो बाज़ार में ले जाती, और वहाँ से डाकखाने पहुँचती थी। इस प्रकार एक महीना बीत गया, परंतु कोई पत्र न आया। पंडित शादीराम सर्वथा निराश हो गए। परंतु फिर भी कभी-कभी सफलता का विचार आ जाता था, जिस प्रकार अँधेरे में जुगनू की चमक निराश हृदयों के लिए कैसी जीवन-दायिनी, कैसी हृदयहरिणी होती है। इसके सहारे भूले हुए पथिक मंजिल पर पहुँचने का प्रयत्न करते और कुछ देर के लिए अपना दुख भूल जाते हैं। इस झूठी आशा के अंदर सच्चा प्रकाश नहीं होता, परंतु यह दूर के संगीत के समान मनोहर अवश्य होती है। इसमें वर्षा की नमी हो या न हो, परंतु इससे काली घटा का जादू कौन छीन सकता है।

आखिर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे। कलकत्ता के एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि अलबम भेज दो, यदि पसंद आ गया तो खरीद लिया जाएगा। मूल्य की कोई चिंता नहीं, चीज़ अच्छी होनी चाहिए। यह पत्र उस करवट के समान था, जो सोया हुआ मनुष्य जागने से पहले बदलता है और उसके पश्चात उठकर बिस्तरे पर बैठ जाता है। यह किसी पुरुष की करवट न थी, किसी स्त्री की करवट न थी, यह भाग्य की करवट थी। पंडित शादीराम दौड़ते हुए लाला सदानंद के पास पहुँचे, और उन्हें पत्र दिखाकर बोले—"भेज दूँ?"

प्यारे बच्चो! लाला सदानंद ने पंडितजी द्वारा इकट्ठे किए सुंदर चित्रों का एक अलबम तैयार कर बड़े-बड़े समाचार-पत्रों में इसका विज्ञापन दे दिया। विज्ञापन देने के बाद पंडितजी हर रोज़ डाकिए का इंतजार करते परन्तु कोई उत्तर न आने से निराश हो जाते थे। उसका उत्तर न आने पर उनकी आशा उड़ती हुई धूल के समान शाम को शांत हो जाती उसी तरह से उनकी आशा निराशा में बदल जाती।

(पृष्ठ-5)

DATE 21.10.24
PAGE No. 5

कक्षा- आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-10 'अलबम') लेखक- सुदर्शन

पंडितजी बिल्कुल निराश हो गए थे फिर लालाजी द्वारा दिलाए गए सफलता के विचार फिर से मन में आजाते। जिस प्रकार एक भूले हुए पथिक के निराश मन में जुगनू की चमक मंजिल तक पहुँचने के लिए एक आशा की किरण लेकर आती है परंतु यह आशा दूर के संगीत की तरह होती है। इसमें वर्षा हो या न हो परंतु काली घटा अपना जादू अवश्य दिखाती है।

बच्चो! अचानक एक दिन पंडित शादीराम के भाग्य जागे। कलकत्ता के एक मारवाड़ी सेठ ने अलबम मँगवाई और पसंद आने पर खरीदने के लिए लिखा। मूल्य की कोई चिंता नहीं। यह पत्र शादीराम के लिए इस प्रकार था जैसे सोया व्यक्ति जागने से पहले करवट बदलता है उसके पश्चात उठकर बिस्तरे पर बैठ जाता है। यह पंडितजी के भाग्य ने करवट ली थी। वे दौड़ते हुए लालाजी के पास पहुँचे और उन्हें पत्र दिखाकर बोले, "अलबम भेज दूँ?" लालाजी पत्र देखकर कहा कि शौकीन व्यक्ति है, खरीद लेगा। मूल्य लिख दो एक हज़ार से कम नहीं होगा। कुछ दिन बाद उसी सेठ का उत्तर आया। पंडितजी ने धड़कते हृदय और काँपते हाथों से लिफ़ाफ़ा खोला और उछल पड़े उसमें सौ-सौ के दस नोट थे। यह देखकर पंडितजी बहुत खुशहुए। खड़े होकर सोचने लगे, "यदि दो हज़ार लिख देता तो शायद उतने ही मिल जाते। यह विचार आते ही उनकी सारी प्रसन्नता किरकिरी हो गई।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं समाप्त करते हैं। पाठ का शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ाया जाएगा। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ। इसे आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य:- पढ़ाए गए पाठ को सब बच्चे उच्च स्वर में दो-तीन बार पढ़ेंगे तथा पृष्ठ-85 पर दिए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner